OM 15_Page 1 and 2 13-10-2014 17:01 Page 3

कोरे कागज़ सा मन...

आध्यात्मिक आकाश टिमटिमाते अनेक सितारों से भरा है। यह एक-एक सितारा एक सूर्य या तो एक महासूर्य है, और हरेक के आसपास एक अपना अभामण्डल ग्रह नक्षत्र से भरा एक अद्भुत जगत है। यहां पर बुद्ध, कृष्ण, कबीर, मीरा, पतंजलि, गोरेख, पालटु, कबीर, जनक, अष्टावक्र, नानक और नागार्जुन उपनिषद काल के अनेक ऋषि-महर्षि आंखे बंद हो जाये ऐसी महारोशनी से टिम-टिमाता ये जगत है।

इस देश में वर्षों से दिशाहीन, और खुदगर्ज़,स्वार्थी के हाथ में यह गौरवशाली देश का भविष्य भंवर मे फंसा हुआ है। दु:ख से हृदय भर जाये ऐसी यह स्थिति है। फिर भी, कहीं भी कुछ भी कोई अशुभ चिन्ह नहीं दिखता। हाँ, आशा से देख सकें ऐसा यह जगत है, जहां से धर्म और अध्यात्म की कोई आशा की किरण इस देश पर उतर सकती है। क्योंकि इस जगत में कोई स्पर्धा, ऊँचे आसन पर बैठने की स्पर्धा या मदहोश, या तड़फते लोगों की छाती पर सवार होकर खून चूसने जैसी हीनता नहीं है। नम्रता, निरहंकारिता, करुणा और सद्भावना का पाठ सिखानेवाला यह एक अनोखा जगत है। इसीलिए ही प्रत्येक सच्चे संत के जीवन में से कोई न कोई दिव्य सुवास उठती दिखाई पड़ती है।

- ब्र. कु. गंगाधर

महाराष्ट्र में ऐसे ही एक त्रिपुटी संत हुए, जिनका नाम एकनाथ, निवृत्तिनाथ और मुक्ताबाई था। लोग अपार आदर और भक्ति भाव से उन्हें देखते थे।

एक बार ऐसा हुआ कि संत एकनाथ ने पत्र लिखा, पत्र में सिर्फ कोरा कागज़ था। कुछ भी लिखे बिना ही कोरा कागज लेकर संदेशवाहक निवृत्तिनाथ के पास पहुँचा, कवर खोलकर कागज़ निकाला और अत्यंत रसपूर्वक उस कागज़ को पढ़ रहे हों ऐसा प्रतीत हो रहा था। शब्द तो उसमें कोई था ही नहीं, लेकिन शून्य में डूब कर आनंद-विभोर हो रहे हों उसी तरह की उनके चेहरे पर प्रसन्नता थी। स्वयं पत्र पढ़कर फिर उस पत्र को मुक्ताबाई को दिया और पढ़ने को कहा। तो मुक्ताबाई ने भी उस पत्र को आनंद और अहोभाव से पढ़ा। दोनों बहुत प्रसन्न हुए और फिर संदेशवाहक को कहा - उत्तर में एक यह हमारा पत्र भी लेकर जाइए। वही प्रतिकृति उन्होंने संदेशवाहक को दिया और कहा कि आप उन्हें वापिस पहुँचाएं।

संदेश ले जाने वाले को आश्चर्य हुआ क्योंकि वो जैसा पत्र लाया था वैसा ही फिर कोरा कागज़ उसे मिला । बड़ी असमंजस की स्थिति है! यह कौन सा खेल चल रहा है। उसने सोचा कि जो पहले पत्र मैं लाया था तब मुझे ख्याल नहीं था कि यह एक कोरा कागज़ है। परंतु अपने सामने ही कवर खोलकर निवृत्तिनाथ और मुक्ताबाई को पढ़ते हुए देखा तो ख्याल आया कि उसमें लिखा तो कुछ भी नहीं था, तब भला इन लोगों ने क्या पढ़ा और किस तरह इतने प्रसन्न हुए! उससे रहा नहीं गया।

नम्रता के साथ उसने निवृत्तिनाथ को पूछा - 'महाराज , इस पत्र को लेकर जाऊं उससे पहले मेरे मन की छोटी सी जिज्ञासा का समाधान करेंगे क्या?

आप दोनों ने मेरे ही सामने पत्र खोला, पढ़ा तो मुझे ख्याल आया कि उसमें कुछ लिखा तो था ही नहीं ,तो आपने उसमें आखिर पढ़ा क्या? पत्र को आप देख रहे थे तो आपके चेहरे का भाव देख मुझे लगा कि ज़रूर आप कुछ पढ़ रहे हैं लेकिन लिखा तो कुछ भी नहीं था उसमें! तो पढ़ा क्या?और आप अकेले ने ही नहीं परंतु मुक्ताबाई जी ने भी यह पत्र पढ़ा और वे भी प्रसन्न हुए! और अब यही कोरा कागज़ जवाब के रूप में मेरे साथ वापिस भेज रहे हैं तो मेरे मन की जिज्ञासा चरमसीमा तक पहुँच गई, इसीलिए मैंने आपसे इसका समाधान पूछा। 'निवृत्तिनाथ ने कहा कि एकनाथ ने संदेशा भेजा है कि परमात्मा को जानने के लिए अंतरतम को इस कोरे कागज़ जितना शुद्ध और खाली करना पड़ेगा। जब तक बाहर के संग्रहित ज्ञान, पंडिताई या अहंकार के भाव मौजूद हैं तब तक ईश्वर की अनुभूति संभव नहीं। अंतर जो दर्पण जैसा स्वच्छ और स्पष्ट बने तब ही ईश्वर का प्रतिबिंब उसमें अनुभव हो सकता है। यही उनके (एकनाथ) कहने का आशय है कि कुछेक बातें ऐसी हैं जो शब्दों द्वारा, कागज़ में लिखकर नहीं कही जा सकता, उसे कहने और समझने के लिए बाह्य जगत से व विकृतियों से शून्य होना पड़ेगा। आपको वैसे भी इस बात का संज्ञान होना चाहिए कि परमात्मा के अनुभव तो शब्दातीत हैं। शब्दों में वे आ ही नहीं सकते। हाँ, शब्दों द्वारा हम इतना इशारा तो कर ही सकते - शेष पेज 7 पर

मन रूपी साम्राज्य को बुद्धि रूपी सम्राट ही नियंत्रित करेगा

ओम शान्ति भवन क्या है? एयरपोर्ट। यहाँ बैठे सब बातें समेट के, समा के शान्तिधाम में चल रहे हैं। मधुबन में यह भासना आती है ना! साकार में मीठे-मीठे बाबा ने हिस्ट्री हॉल में बैठ बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनाई हैं। फिर मेडिटेशन हॉल में अव्यक्त बापदादा की पधरामणी होते ही बाबा के डबल विदेशी बच्चे पैदा हुए। वैरायटी बाबा के बच्चों को देख जैसे अर्जुन कहता है मैंने अभी आपको पहचाना, आपके विराट स्वरूप को। साकार में तो क्या बताऊँ, पर अव्यक्त हो करके हम सबकी अव्यक्त स्थिति बनाने के लिए कितना प्यार से पालना कर पढ़ाई पढ़ा रहे है।

साइलेंस माना कोई चिंतन नहीं, ऐसी स्थिति सदा रहे। बाबा के ही चिंतन में रहूँ, कोई बात मन चित्त में न हो, जो बाबा मेरे चिंतन में रहे क्योंकि कोई भी बात मन चित्त में होगी, मन में पहले होती है, चित्त में अंदर होती है। मन में मोटे रूप में होती है, चित्त में पुरानी बात होती है। वो निकल आती है तो चेहरे पर भी आ जाती है, शब्दों में भी आ जाती है। बड़ा सम्भालना है। साक्षी और साथी बन पार्ट प्ले करो। बाबा ने यह भी कहा जो भी बाबा के बच्चे हैं, बाबा को अच्छे लगते हैं क्योंकि कहता है मेरे तो बच्चे बन गये ना इसलिए बाबा यह कभी नहीं कहता है कि यह अच्छा नहीं है, पर बनो कैसा वो स्पष्ट सुनाता है। उसमें भी दो बातें बहुत खतरनाक हैं, जब मेरा बाबा कहा तो भूल से भी कोई देहधारी से लगाव न हो। किसी से प्रभावित हुआ या किसी के लिए घृणा रखी तो बाबा याद नहीं आयेगा। हिम्मते बच्चे मददे बाप वाला जो सौदा है वो कैन्सिल हो गया। यह बड़ी भूल है, जिसको बाबा कहते किसके साथ फैमिलीयरटी में बातचीत करना या किनारा करना। इसका बहुत ध्यान रखो क्योंकि बाबा चाहता है मेरे बच्चे राज्य पद पायें इसलिए राजयोग सिखाते हैं, राजाओं का राजा बनाते हैं।

आजकल राजाओं के पास कुछ रहा ही नहीं, आज के राज्य में राजाई को खत्म कर दिया। द्वापर के शुरुआत में जो राजायें थे वो दान-पुण्य करते, मंदिर बनाते, एक जन्म में भी राजाई ली थी पर बाबा हमको 21 जन्मों के लिए राजाई दे रहे हैं। मैं तो कहती 84 जन्म ही हम राजाई संस्कार में रही हूँ माना मन कर्मेन्द्रियों के इच्छा वश नहीं रही होंगी, अंतिम जन्म में भी नहीं रही होंगी। इस अंतिम जन्म में बाबा का बनने से पहले बचपन से ले करके सारी स्टोरी को इमर्ज करती हूँ, कभी मन व कर्मेन्द्रियों के वश कोई ऐसा कर्म नहीं किया। तो सभी कान खोलके सुनो अभी हरेक की पर्सनैलिटी में ऐसी रीयल्टी हो। कहा जाता है नियत साफ मुराद हासिल। नियत साफ है अर्थात् स्वार्थ वा स्वभाव वश नहीं हैं, तो ऐसे जो संकल्प करते हैं वो प्रैक्टिकली लाइफ के अंदर कोई संकल्प आया तो वो साकार हो जाता है। सिर्फ संकल्प निमित्त आयेगा, वह साकार हो ही जायेगा। अगर इसी तरीके से किसी को राज्य पद पाना है तो अपनी स्थिति ऐसी बनाओ। साथ रहना हो तो बाबा को साथी बनाकर सेवा में साक्षी हो रहना। गैरंटी है, अंत मते मुझे कोई भी बात का संकल्प नहीं आयेगा, यह मेरी चीज़ है, यह मेरे भाई बहन हैं। मेरी है ना, तो मैं कौन हूँ? इस शरीर में आत्मा हूँ परंतु बाबा कहता है तुम शरीर में आत्मा, तुमको कैसे रहना है जैसे मैंने तुमको चलाया है। एक बारी मैंने अव्यक्त बाबा को कहा बाबा अच्छा चला रहे हो, तो बाबा ने कहा चल रही हो तो मैं चला रहा हूँ। तो अटेन्शन भूल मत जाना। बाबा भी मुफ्त में मदद नहीं करता है, हमको मरना, झुकना, सीखना है। यह हमारे क्वीन मदर के शब्द सदा काम में आये हैं, मुझे मरना है। ऐसे नहीं सदा मैं ही मरूँ, हाँ मैं ही मरूँगी। तो जो बाबा ने सिखाया है वही करना है, इसमें धीरज रखने से कोई भी संकल्प नहीं आता है। सब शक्तियाँ बाबा से लेनी हो तो धीरज धर मनुआ... जल्दी उतावली में आ करके ऐसे नहीं करो। तो सभी सदा खुश रहो, आबाद रहो, न बिसरो न याद रहो। यह जो भी बातें सुनाई हैं वो बातें न बिसरो और जो न काम की बातें हैं वो न याद करो।

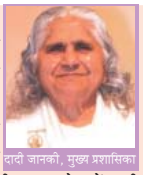

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

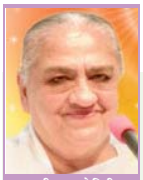

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

मन में शक्तियों का स्टॉक होगा तो व्यर्थ संकल्प स्टॉप होगा

बाबा से हमारे सर्व सम्बन्ध हैं - यह अनुभव बहुत गहरा होना चाहिए। सखा चाहिए तो बाबा को सखा बना लो, कम्पैनियन की रीति से कम्पनी और कम्पैनियन बाबा को बना लो। ऐसे नहीं कि बाबा, बाबा ही है लेकिन बाबा सब कुछ है। कोई समय उदास हो जाते हैं, अकेले-अकेले महसूस करते हैं तो बाबा को अपने कम्पैनियन रूप में जीवन का साथी बना दो। वैसे साथी तो साथ में रहते हैं लेकिन बाबा हमारे जीवन का साथी है जिस रूप में बाबा को याद करेंगे, बाबा आपको साथ देने के लिए बन्धा हुआ है इसलिए अधिकार से बाबा को याद करो।

ऐसे नहीं योग लगा, नहीं लगा...अरे क्यों नहीं योग लगता, मेरा बाबा है, तो मेरा कभी भूलता है क्या! जैसे अपना शरीर व शरीर का नाम कभी भूलता है? आपके नाम से अन्य दूसरे किसी को बुलायेंगे तो भी आप ऐसे करेंगे ज़रूर। तो बाबा मेरा है, मैं बाबा की हूँ तो मेरे का अधिकार है और मन्सा भी तभी ठीक होगी। सेवा के लिए पहले हमारी मन्सा बहुत क्लीयर होनी चाहिए, और कुछ उसमें नहीं होना चाहिए। अगर कोई किचड़ा होगा तो ऐसों के साथ बाबा नहीं बैठ सकता है। बाबा की याद नहीं आ सकती है क्योंकि बाबा अति स्वच्छ है और अन्त के समय तो आपको पता ही है कि क्या हालतें होंगी। ऐसे वायुमण्डल में आप मन्सा सेवा करने के लिए अगर सोचते हो कि करना तो है ही, लेकिन पहले देखो कि मन और बुद्धि क्लीयर है? जैसे सेंटर में अगर सफाई नहीं होगी तो वह सेंटर गृहस्थी घर लगता है। तो जैसे सेंटर या स्थान जहाँ हम बैठते हैं उसकी सफाई ज़रूरी है, ऐसे अगर मन्सा सेवा करनी है तो पहले मन हमारा क्लीयर हो। चेक करो कि मन में और और बातें तो नहीं हैं? अगर और बातें नहीं हैं तो मन्सा सेवा कर सकते हैं। सेवाओं के समय मन्सा में सर्व-शक्तियों का स्टॉक इकट्ठा होना चाहिए। सर्व छोड़ो, कम से कम 8 शक्तियों का मेरे मन में स्टॉक हो। अगर स्टॉक ही नहीं होगा तो आप देंगे क्या? पहले एक-एक शक्ति को सामने लाओ - मेरे में सहनशक्ति है? समाने की शक्ति है? कितने परसेन्ट में है? समय पर यूज़ होती है? यह दो बातें चेक करो। यह अभ्यास अभी से शुरु करो कि कौन-सी शक्ति किस समय यूज़ करने का क्या अनुभव है? नहीं तो उस समय धोखा मिल सकता है और स्टॉक जमा करने के लिए सिर्फ स्टॉप करने की विधि को अपनाओ माना बिन्दी लगाने की विधि को अपनाओ। अभी लास्ट समय में प्रकृति और माया दोनों ही अपना बहुरूप धारण कर हमारे सामने आयेगी, तो उस समय अगर हम आत्मा पावरफुल नहीं होगी तो और आत्माओं का प्रभाव भी हमारे ऊपर पड़ सकता है। इसीलिए आत्मा बहुत पावरफुल चाहिए। इसके लिए अभ्यास करो कि एकदम स्टॉप। कईयों को किसी का रोना देख करके भी रोना आ जाता है, और अन्त समय में तो चिल्लायेंगे, खून की नदियाँ बही हुई होंगी फिर क्या करेंगे? अगर हमारे पास इतनी शक्ति नहीं है, तो चाहे माया का, चाहे प्रकृति की हलचल का, चाहे व्यक्तियों का कोई भी प्रभाव पड़ सकता है। तो कोई भी प्रभाव हमारे ऊपर नहीं पड़े इसके लिए हमारी शक्तिशाली स्थिति होनी चाहिए और मन पर पूरा कन्ट्रोल होना चाहिए। कुछ भी हो रहा है परन्तु हमें साक्षी दृष्टा बनकर, सीट पर बैठकर देखना है। यह बेहद का ड्रामा है, इसमें यह सब होना ही है और हमने ही कहा है यानि हमने प्रकृति को ऑर्डर दिया है। यदि ऑर्डर देने वाले ही हलचल में आ जावें तो प्रकृति बिचारी क्या करेगी! जैसे हद के ड्रामा को देखते समय कभी कन्फ्यूज़ नहीं होते, ऐसे ही हम साक्षीपन की सीट पर बैठ करके यह सब खेल देखते रहें, हलचल में नहीं आ जायें। हाय, हाय नहीं करें - वाह ड्रामा वाह!...तो इतनी स्थिति पहले पक्की है?